International Journal of Applied Research 2019; 5(6): 445-447

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(6): 445-447
www.allresearchjournal.com
Received: 30-04-2019
Accepted: 31-05-2019

चन्दीर पासवान
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग,
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

Correspondence
चन्दीर पासवान
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग,
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

प्रेमचन्द के कथा–साहित्य में नारी अस्मिता की समीक्षा

चन्दीर पासवान

सारांश
प्रेमचन्द अपने उपन्यास और कहानियों में नारियों के प्रति दयावान दिख रहे हैं और दिखे भी क्यों न पुरुषों की भोगवादी प्रवृत्ति के कारण नारियाँ हमेशा से शोषण की शिकार होती रही हैं। जो लोग जितने बड़े महान कहे जाते हैं वे नारियों का उतना बड़ा शोषक है– जैसे राजा–महाराजा सब नारियों के रूप–लावन्य के आधार पर आशक्त होकर शोषण करता है जो नारी जितना अधिक रूप, गुण, शील, स्वभाव से बड़ी मानी जाती थी, उसका उतना ही ज्यादा शोषण किया जाता था। ऐसे में नारियों की अस्मिता खतरे में पड़ना आम बात है, समाज की सबसे बड़ी खामिया दहेज–रूपी कोढ़ को भोगना है। जिसका शिकार 'सेवासदन' की नायिका सुमन को होना पड़ता है। प्रेमचन्द ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि जिस चीज को समाज प्रतिष्ठा समझता है, बचाने के लिए सब कुछ दाव पर लगाकर भी अंततः दिखार हो ही जाता है। इसी के परिणामस्वरूप सुमन अपने नापसंद पति को छोड़कर वेश्यावृति अपना लेती है। निर्मला अपने पति के द्वारा शक का शिकार होती है और उनका घर उत्थान के बजाय पत्तनोन्मुख हो जाता है। 'गोदान' में भोला की बेटी को गोबर के साथ भागकर विवाह करने का कारण दहेज ही है और दूसरी बात समाज का जरूरत से ज्यादा प्रतिबंध लगाना है। प्रेमचन्द नारी को इस मानसिकता से मुक्त करना चाहते है। जिससे नारी खुली हवा में साँस ले सके। प्रेमचन्द यह भी चाहते हैं कि नारी को जीवन का जो भी क्षेत्र हो जैसे– शिक्षा, राजनीतिक, आर्थिक, कानूनी, धार्मिक सभी प्रकार की स्वतंत्रता मिलना चाहिए, तभी राष्ट्र का उद्धार सम्भव है। नारी की अस्मिता की रक्षा भी प्रेमचन्द के साहित्य का एक बहुत बड़ा उद्देश्य है।

भूमिका
कथा–सम्राट् प्रेमचन्द का पहला प्रमुख उपन्यास सेवासदन है। 1916 ई. से 1917 ई. में लिखा गया यह उपन्यास पहली बार हिन्दी में प्रकाशित हुआ है। जबकि पहले प्रेमचन्द ने उर्दू में ही लिखा था और इसका नाम रखा था बाज़ार–ए–हुस्न। इस उपन्यास में प्रेमचन्द्र ब्रिटिश–कालीन मध्यवर्गीय समाज की पिछड़ेपन और रूढ़िवादिता पर चोट की है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास में नारी–मुक्ति के रास्तों की तलाश की है। भारतीय विवाह, विवाह–समस्या, वेश्या–समस्या के प्रति उनका उपन्यास आलोचनात्मक रवैया आख्तयार करने के लिए प्रेरित करता है। इस उपन्यास में खासतौर पर केन्द्रीय किरदार 'सुमन' के चरित्र का वर्णन किया गया है। वह परिवार और समाज के खिलाफ विद्रोह करती है। वह स्त्री के आत्मसम्मान का प्रतीक है और इसकी रक्षा के लिए परिवार, समाज और अपने स्वामी से संघर्ष करती है। नारी के प्रति प्रेमचन्द के दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ने का तत्कालीन कारण यह था कि 1917 ई. में नारियों का पहला प्रतिनिधिमंडल तत्कालीन 'सेक्रेटरी स्टेट ऑफ इंडिया' लार्ड मौन्हेरसू से मिला और नारियों के लिए पुरुषों के समान वोट देने के अधिकार की माँग की। नारियों ने अपने जनसभाएँ आयोजित की और सरकार के पास अपनी माँग पेश की। 1917 ई. के इंडिया नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता एनीवेसेंट ने की थी। इस घटना से प्रभावित होकर प्रेमचन्द ने 'सेवासदन' में 'सुमन' जैसी पात्र की सृजन की।
मध्यमवर्ग के दिखावटी फिजूलखर्ची के दुश्परिणाम को प्रेमचन्द बार–बार अपनी उपन्यासों और कहानियों में दिखाते रहे हैं। 'सेवासदन' और 'निर्मला' इस कारण से कुछ ज्यादा ही मिलते–जुलते उपन्यास है। दोनों उपन्यासों में लड़की के बाप अच्छे पदों पर रहने के बावजूद अपनी लड़की के शादी के लिए कुछ धन संग्रह नहीं करते हैं जिस कारण कन्या को परिवार में मुख्य अधिकार से वंचित रहना पड़ता है। दिखावटी दहेज के अभाव में उपन्यास 'निर्मला' की पात्र निर्मला और 'सेवासदन' की सुमन का विवाह दुत्ती व्यक्ति से हो जाता हैं 'निर्मला' उपन्यास में उदय भानूलाल की हत्या हो जाती है और दहेज के अभाव में उसका विवाह–विच्छेद हो जाता है और अंत में तोताराम नामक एक अधेड़ और दुत्ती आदमी से निर्मला का विवाह हो जाता है। जिसका पहले से तीन पुत्र है– सियाराम, जियाराम और मंसाराम।
'निर्मला' में भारतीय परिवार और समाज में विशेष तौर पर दहेज नहीं दिये जाने के कारण स्त्री पर पड़नेवाली विपदा को कथा की धुरी बनाया गया है। इसके अलावा इसमें वेमेल–शादी की विसंगतियों

का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। प्रकारान्तर से स्त्री–पुरुष के स्वभाविक आकर्षण, परिवार और घर की देहरी में बँधे रहने के कारण महिला की मानसिक बनावट और स्थिति का भी वर्णन इस उपन्यास में किया गया है।

नारी की इसी मनःस्थिति को 'गबन' में देखा जा सकता है। पत्नी का गहनों के प्रति आसक्ति पति का बड़बोलापन, धर्मपत्नी को खुश करने के लिए सरकारी खजाने से रुपये चोरी करना ये सब नये उभर रहे भारती मध्यवर्ग की कमजोरियाँ थी। यह नया मध्यवर्ग भारतीय पारिवारिक और सामाजिक ढाँचे को तोड़ रहा था। सामन्तवाद से पूँजीवादी की ओर बढ़ते समाज में सब कुछ बदल रहा था। लोग नगरों में नौकरी करने लगे थे उनका परिवार नगरों में आकर रहने लगा था। इस प्रकार से परिवार का ढाँचा बदल रहा था। अब दोनों दम्पत्ति एक–दुसरे के समान थे। कर्जखोरी, फिजूल खर्च, झूठी प्रतिष्ठा, झूठागर्व आदि मध्यवर्गीय मानसिकता के लक्षण थे। प्रेमचन्द के सामने यह बड़ा प्रश्न खड़ा था कि स्वतंत्र भारत में महिलाओं की नियति क्या होगी और समूचे उपन्यास में बार–बार यह प्रश्न उभर कर आता है?

'गबन' भी उद्देश्य पूर्ण रचना है। इसमें प्रेमचन्द ने मध्यमवर्गीय समाज का खोखलेपन और दिखावामय आडम्बर तथा प्रदर्शन की भावना जैसी कमजोरियों का तो पर्दाफाश किया ही है, साथ ही समाज, परिवार और राष्ट्र में नारियों की बड़ी भूमिका के महत्त्व को भी चित्रित किया है। नारियों को घर का देहरी लांघने के लिए प्रेमचन्द प्रोत्साहित करते हैं और यह मानते हैं कि नारियाँ ही मध्यवर्ग की रूढ़ियों से ग्रसित मानसिकता को तोड़ सकती है, पुरुष नहीं। इसीलिए उन्होंने रमानाथ को कमजोर और जालपा जैसी पात्र को मजबूत बनाया है। वस्तुतः 'गबन' नारियों के आभूषण प्रेम की कहानी नहीं है, बल्कि राष्ट्र–निर्माण में नारियों की योगदान की भूमिका का सार्थक हस्तक्षेपमय वर्णन है।

सेवासदन उपन्यास में सुमन को नारी मुक्ति का अगुआ बनाकर प्रेमचन्द ने बताने का प्रयास किया कि नारी को अपना उद्धार खुद करना होगा, उसे अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी। प्रेमचन्द ने अपनी इसी चिंतन–धारा के कारण सुमन जैसी पात्र का सृजन किया और 'सेवासदन' एक बहुमूल्य रचना समाज को दिया। 'सेवासदन' एक ऐसा उपन्यास है, जिसमें वेश्याओं की पुत्रियों को लिखा–पढ़ाकर मुख्य धारा में शामिल करने का प्रयास किया जायेगा। यह उपन्यास नारी–पुरुष की बहुत सारी समस्याओं को हमारे सामने लाता है।

'गोदान' में किसानों की बदहाली को प्रेमचन्द ने केवल वर्णन ही नहीं किया है, आजादी से पहले बल्कि उसके कारणों का भी खोजबीन की है। साफ तौर पर प्रेमचन्द ने इस उपन्यास में लिखा है कि साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी नीति है। 68 साल के आजादी के हो जाने के बावजूद भी भारत के कृषक होरी बनते जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि उनकी स्थिति होरी से भी ज्यादा बद् से बदत्तर होती जा रही है। आजाद भारत पर होरी की आत्महत्या भी सवाल खड़ा कर रहा है। इस कारण से प्रेमचन्द का यह उपन्यास आज और भी ज्यादा प्रासंगिक हो उठता है। हमारा उद्देश्य देश में ऐसा वायुमंडल उत्पन्न कर देना है, जिसमें आवश्यक किस्म का साहित्य का निर्माण हो सके और पनप सके। जनवादी दृष्टिकोण से आदर्श भाषा के स्वरूप को लक्ष्य करके उन्होंने कहा– ''जो कुछ लिखा जाये उसका फायदा जनता भी उठा सके और हमारे यहाँ पढ़े–लिखों की खोज संगठन जो अलग बनती जा रही है और आम जनता से उसका सम्बंध जो दूर होता जा रहा है, वह दूरी मिट जाय।'' [1]

'चरित्र–चित्रण' में प्रेमचन्द के चरित्र–चित्रण की प्रविधि स्पष्ट है। पहले वे अपने पात्र का खांका खीचते हैं और उसके बाद फिर उनमें क्रियाकलापों के जरिये उसका पूरा हालसमाचार पाठकगण को दिलाते हैं। प्रेमचन्द दीनानाथ का जो चरित्र–वर्णन रेखांकित करते हैं, उसमें एक ईमानदार सरकारी नौकर की तस्वीर उभरता है उपरवाइली कमाई को हराम मानते हैं।

तोताराम ठेठ मध्यवर्गीय पात्र है और मध्यवर्ग की सारी खूबियाँ जो बुड़ाई से युक्त है। उसमें मौजूद उनकी खामियों का चित्रण प्रेमचन्द इस तरह से करते हैं– ''वकील साहब का नाम मुंशी तोताराम। वे शंकालु व्यक्ति थे और उनकी शंका के कारण ही उनका घर–परिवार नष्ट हो गया। उनका बेटा उनकी शंका की बलि चढ़ गया। इसके बाद पुत्र का शोक उनको व्यथित कर देता है और वे निराश व्यक्ति के रूप में उपस्थित होते हैं।'' [2]

'गबन' उपन्यास का एक बात तो यह है कि गाँधी जी के नेतृत्व में चल रहे स्वाधीनता आन्दोलन की खासियत यही थी कि इसका जनाधार, बहुत बड़ा था और अंग्रेजों का अर्थशास्त्र गाँधी जी ने सबको समझा दिया था और लोगों में स्वदेशी का भावना जाग्रत हो गयी थी और लोग विलायत की कपड़ों का पुरजोर बहिष्कार कर देश में बना कपड़े पहनने लगे थे। देवीदीन एक स्थान पर कहता है कि इधर बीस साल से तो नहीं लिए उधार की बात नहीं करता। दाग कुछ देसी लग जाता है, परन्तु रुपया देश में ही रह जाता है। प्रेमचन्द देवीदीन खटिक के माध्यम से कहना चाहते हैं कि देश का भविष्य किसानों और मजदूरों के हाथ में होगा तभी जाकर भारत सही रूप से आजाद हो सकेगा।

होरी परम्परागत किसान है उसका चरित्र अत्यन्त साधारण हैं वह एक दलित, निर्धन, पिछड़ा परम्परागत दृष्टिकोण तथा मूल्यों वाला किसान है। उसके चरित्र में कुछ भी विशिष्ट और असामान्य नहीं है। वह त्यागी, विनीत, मधुर, दक्ष, प्रियंवद शुद्ध अन्तःकरण वाला, स्थिर कर्त्तव्यपरायण, स्नेही पारिवारिक व्यक्ति है।

गोबर उस नयी पीढ़ी का युवक है, जो बीसवी शताब्दी में प्रौद्योगिकी सभ्यता के उदय के साथ अंकुरित हुई है। गोबर मानता है कि धनी वर्ग अन्याय अर्धम और शोषण के बल पर धनी बनने में समर्थ हुआ है। होरी के गले यह बात नहीं उतरती, क्योंकि वह देखता है कि राय साहब रोज चार घंटे भगवान की पूजा करते हैं। पर गोबर को राय साहब के भजन–पूजन में विश्वास नहीं है, वह उनका खोखलापन समझता है।

गोबर की माँ धनिया इस चरित्र में भारतीय स्त्री–चरित्र का अत्यन्त दिव्य रूप से प्रकट हुआ है। धनिया का मातृस्नेह पाठकों को ही नहीं होरी को भी विचलित कर देता है, होरी को इस बीच जवानी में भी वही कोमल ह्रदयवाली लड़की नजर आयी, जिसने लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व उसके जीवन में आयी थी। उस आलिंगन में कितना अथाह वात्सल्य था, जो सारी सीमाओं और सारी मूलवक्ष परम्पराओं को अपने अन्दर में समेट लेता था।

इसी कड़ी में 'निर्मला' उपन्यास की नायिका निर्मला एक संवेदनशील और भावुक लड़की है। अपनी इस संवेदनशीलता और भावुकता के कारण ही वह मंसाराम और अन्य बच्चों से स्नेह करने लगती है। उसे अपना उत्तरदायित्व भी मानती है। वह इतनी संवेदनशील है कि किसी भी दुर्घटना का जिम्मेदार वह खुद को मानती है, तो तोताराम और मंसाराम के बीच बढ़ती दूरियाँ हो या फिर आत्महत्या डॉक्टर द्वारा की गयी। निर्मला ने डॉक्टर के प्रणय निवेदन को अस्वीकार कर दिया था। यह निर्मला के चरित्र की दृढ़ता थी। परन्तु शर्म से डॉक्टर द्वारा आत्महत्या करने का जिम्मेदार वह खुद को मानती है।

आज भी भारत की लगभग सत्तर प्रतिशत भाग अपनी जीविका के लिए कृषि कार्य पर निर्भर है और यह स्थिति भारत में अंग्रेजों के शासन स्थापित होने के सैकड़ों वर्ष बाद भी चली आ रही है। भारत का पिच्चासी प्रतिशत आवादी लगभग गाँव में ही निवास करती है। अतः भारत में न केवल ग्रामीण जीवन खेती पर निर्भर है, वरन एक कृषि संस्कृति का निर्माण भी हो गया है, जिसके अपने विश्वास, मूल्य, आस्थाएँ तथा जीवन पद्धतियाँ है। प्रस्तुत वर्णन के आधार पर हम 'ग्रामीण जीवन' और खेती संस्कृति पढ़ों का उपयोग विषय को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने के लिए कर रहे हैं, अन्यथा दोनों एक दूसरे से भिन्न नहीं है। आजादी मिलने के बाद ग्रमीणों की मूल्य धारणा, विश्वास राजनीतिक विचारधारा समझने और सोचने का ढंग में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं।

गाँव की तस्वीर कहे तो ''गाँव क्या था पुरवा था, दर बारह घरों का जिसमें आधे खपरैल के थे और आधे फूस के।'' [3] ''एक कोने में तुलसी का चबुतरा है, दूसरी ओर जुआर के ढ़ेरों के कई बोझ दीवार से लगाकर रखे हैं।'' [4] ''एक खर्टाकन बेर और मकोय बेच रही थी और खोचेवाला जलेबियाँ लिए फिर रहा था।'' [5] ''किसी खूँटी पर ढोलक लटक रही थी, किसी पर मजीरा। एक ताख पर कोई पुस्तक बस्ते में बँधी हुई थी, जो शायद रामायण हो।'' [6]

उपर जैसा वर्णन किया गया है। ग्रामीण जीवन की उस छवि का दिग्दर्शन आज भी उत्तर भारत में देखने को मिलता हैं प्रेमचन्द ने ग्रामीण किसानों की गरीबी और असहायता का केवल बयान भर नहीं किया हैं उनके अनुसार किसानों की दुख्यवस्था का कारण यह है कि वे पुलिस, पटवारी, जमींदार, महाजन और पुरोहित सबके शोषण के शिकार हैं।

किसानों के शोषण के मूल में उनकी अशिक्षा, धर्म भीरूता, सामन्ती मूल्यों में विश्वास और संगठन के अभाव को देखते हैं। रामसेवक उक्त प्रसंग में अपने एक अनुशासन का उल्लेख करता है कि किस प्रकार किसानों के संगठन जाने पर शोषण करने वालों की एक नहीं चलती। पर किसानों में संगठन की आवश्यकता भी है।

'गबन' महिलाओं की आभूषण प्रेम से होता है। जो बाद में जाकर विकराल रूप धारण कर लेता है। वर्तमान जीवन के बारे में तो कथाकार आँखों देखा हाल सुनाता चलता है, परन्तु हम देखते हैं कि बातचीत के माध्यम से भी पाठकों को कथा दिखाता चलता है। प्रेमचन्द पाठकों के मन का हाल जानने के लिए वह उनके मस्तिष्क रूपी रंगमंच पर चल रहे क्रियाकलापों से पर्दा हटा देता है और पाठक सीधे उन दृश्यों को देखने लगता है। [7]

'गोदान' में प्रेमचन्द ने भारतीय किसान के जीवन और कृषि–संस्कृति के डगमगाने और भरमान की कहानी कही है। इस गोदान उपन्यास का नायक होरी जी–जान ले परम्परागत कृषि–संस्कृति के बचाने का प्रयत्न करता है, परन्तु शोषकों के चक्रव्यू के चंगुल से बचा नहीं पाता और इस संघर्ष में वे किसान से मजदूर बनता है। प्रेचन्द पात्रों को उपन्यास की आत्मा मानते थे। उनके पात्र जीते जागते हैं। इसीलिए उन सबका अलग–अलग व्यक्तित्व है, वे अपनी–अपनी भाषा में बात करते हैं कोई भी पात्र एक भाषा नहीं बोलता। वे अपने सभी पात्रों को पूरी छूट देते हैं और यही उनके पात्र–निर्माण की सबसे बड़ी विशेषता है। सभी वर्ग के चरित्र हैं और अपने वर्ग के अनुरूप ही कार्य करते प्रतीत होते हैं।

निष्कर्ष

ऐसा देखा जाता है कि शुरू से ही समाज की दृष्टि नारियों के प्रति उपेक्षापूर्ण है। राजा–महाराज की दृष्टि नारी के प्रति भोगमय रही है तो दूसरी ओर धर्म के ठेकेदारों को भी नारियों के प्रति अच्छा दृष्टिकोण नहीं था। उनका मानना था कि नारी नरक का द्वार है, आत्मोत्थान के विकास में बाधक है। आधुनिक समाज में जो कुछ परिवर्तन हुआ है उसमें बहुत कुछ प्रेमचन्द जी के कथा साहित्य का बहुत बड़ा योगदान हैं जहाँ जैनेन्द्र की पात्र मृणाल स्वयं घुटकर रह जाती है वही प्रेमचन्द के पात्र झुनिया अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए पाखंडी पंडित का पुरजोर विरोध कर सफलता प्राप्त कर लेती है। यह प्रसंग आधुनिक नारियों के मुक्ति के लिए एक बहुत बड़ा प्रेरक प्रसंग है।

अन्ततः मैं निष्कर्ष के रूप में यही कहना चाहूँगा कि नारीकल्याण के प्रति जो प्रेमचन्द जी का सपना था कथा, कहानी, उपन्यास के द्वारा किया गया प्रयास आज फलता फूलता दिख रहा है।

संदर्भ

1. हिन्दी उपन्यास का समाजशास्त्र– गरिमा श्रीवास्तव, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 1987 ई.
2. हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास– डॉ. गोपाल राय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2001 ई.
3. हिन्दी सहित्य का इतिहास– डॉ. नागेन्द्र, मयूर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973
4. हिन्दी साहित्य का दुसरा इतिहास– डॉ. बच्चन सिंह, राधा–कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996 ई.
5. हिन्दी गद्य–साहित्य– डॉ. रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1986
6. प्रेमचन्द : विविध संदर्भ, सम्पादक– अरविन्द कुमार, अभिधा प्रकाशन, दिल्ली, 2012 ई.
7. प्रेमचन्द एक पूनर्मल्यांकन, सम्पादक– डॉ. नागरत्ना एन. राव; डॉ. सुमन टी. आर., वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली